सम्मिलित पूजा

श्री देवशास्त्र गुरु, श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर, श्री सिद्ध परमेष्ठी, श्री अकृत्रिम चैत्यालय एवं श्री निर्वाण क्षेत्र सम्मिलित पूजा

बन्दू श्री अरहन्त को, जिनवाणी मुनिराज।
बीस तीर्थंकर को नमूँ, नमो सिद्ध महाराज॥
चैत्य चैत्यालय सिद्ध क्षेत्र को नमन करूँ दरबार।
आह्वानन विधी आचरू, सिद्ध करो भवपार॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरु समूह श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर समूह। श्री अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी समूह त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिम अकृत्रिम जिन चैत्य चैत्यालयानी एवं निर्माण क्षेत्रेभ्यो, अत्र अवतर अवतर संवोषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सिन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

जन्म जरा अरु मरण प्रभु, इन तीनों से मैं घबराया।
नाश करो त्रय रोगों का, जल से मैं पूजों जिनराया॥
देवशास्त्र गुरु बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभू को मै ध्याऊँ।
चैत्य चैत्यालय सिद्ध क्षेत्र को, नमन पूज कर शिव पाऊँ॥

ॐ ह्रीं श्रीदेवशास्त्रगुरुभ्यः श्री विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यः, श्री अनन्तानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यो, त्रिलोक सम्बन्धी कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालयेभ्यो एवं निर्माण क्षेत्रेभ्यो जनम जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ॥जलम्॥

चन्दन जल

नरक निगोंद देव मानव त्रियंच, गति में दुख पाया।
ले चन्दन से पूजूं भव आताप, हरो प्रभू जिनराया॥ देवशास्त्र...

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो..... संसारताप विनाशनाय चन्दनं निर्वपामीति स्वाहा॥

सफेद चावल

अन्तर मुहुर्त तीन पल्य सागर की आयु मैं पाया।
बिन आश्रय पद भटक रहा, इस नश्वर जग से घबराया॥ देवशास्त्र...

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो..... अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा॥

पीले चावल

भोग रोग में काल बिताते, हो बेसुध गोते खाया।
काम भोग महा निहा जगत में, नाश करों प्रभु जिनराय॥ देवशास्त्र...

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो..... कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा॥

सफेद चिटकी

भांति-भांति के व्यंजन खाये, ज्यों खाये त्यों तरसाया।
भूख रोग विकराल जगत में, नाश करो प्रभु जिनराया॥ देवशास्त्र...

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो..... क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा॥

पीली चिटकी

किसके हितकर और अहितकर ज्ञान जगत में भरमाया।
मोह रोग नाशन है जिनवर तेरी चरण शरण आया॥ देवशास्त्र...

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो..... मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा॥

धूप

कर्म रिपु ने नाच नचाया, पराधीन हो दुख पाया।
अष्ट कर्म के नाश करन को, धूप जलाने मैं आया॥ देवशास्त्र...

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो..... अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा॥

फल

भव वन में फिरते हार चुका है नाथ अति में घबराया।
मोक्ष महाफल पावन कारन, हे जिनवर शरणै आया॥ देवशास्त्र...

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो.....मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा॥

अर्घ

तीन लोक में दर-दर भटका, दुख का पार नहीं पाया।
अष्ट द्रव्य से पूजूं-प्रभू वसु कर्म रहै न जिनराया॥ देवशास्त्र...

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यो..... अनर्घपदप्राप्तये अर्घं निर्वपामीति स्वाहा॥

जयमाला

देवाधि देव अरहन्त देव, छयालिस गुण युत रहे सदैव।
अष्टादश दोष रहित बखान, उन प्रभु के चरणों में प्रणाम॥
केवल सुज्ञान निकली महान, अंग पूर्व का जिसमें बखान।
अनेकान्त बहे धारा प्रधान, जिनवाणी को करता प्रणाम॥
द्वे अर्ध दीप मुनिवर सुजान, नव कोटि तीन कम है प्रमान।
सम भाव लिंगी ऋषिवर महान, उन गुरु वर को मेरी प्रणाम॥
जय बीस तीर्थंकर विद्यमाण, जहा चतुर्थ काल रहता समान।
नित धर्म धार बहती अपार, चरणों में नमन है बार-बार॥
जय मुक्ति शिला पर विराजमान, जग झंझट से हो गये विराग।
अनन्तानन्त हैं शाश्वत सुजान, उन सिद्धों को मेरा प्रणाम॥
बसु कोटि अरू छप्पन जु लाख, सत्याणव सहस चतुशत जु लाख।
इक्यासी ऊपर असंख्य जान, जिन धामों को मेरी प्रणाम॥
द्वय अर्ध दीप क्षेत्र सुजान, गुरु भूत भविष्य वर्तमान।
चौबीसी तीस अनन्त जान, निर्वाण स्थल को है प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री देवशास्त्र गुरुभ्यों श्री विद्यमान बीस तीर्थंकरेभ्यो, श्री अनंतानंत सिद्ध परमेष्ठिभ्यों, श्री त्रिलोक संबंधी कृत्रिम अकृत्रिम चैत्यालयेभ्यों, श्री निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ पद प्राप्ताय अर्घम् निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

देवशास्त्र गुरु चरण को बन्दु बारम्बार।
विद्यमान श्री बीस तीर्थंकर भव से तारनहार॥
सिद्ध समूह प्रणाम सदा, सेवक है सुखकार।
चैत्यालय सिद्ध क्षेत्र है शिव सुख के दातार॥

इत्याशीर्वादः ।